Part-2. Paper-IV unit-1

Intensive Subsistence Farming

S. Mazumdar

सम्पूर्ण विश्व के कृषि प्रदेशों को वर्गीकृत करना काफी कठिन है, क्योंकि पूरे विश्व में बड़े जटिल कृषि के तरीके पाए जाते हैं, जिसके अन्तर्गत विभिन्न फसलों का उत्पादन तथा पशुपालन आते हैं, साथ ही यह तो सर्वविदित कारक है कृषि को प्रभावित करने के - जलवायु, मिट्टी और धरातल, इन सबकी विभिन्नताएँ मिलकर, विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के कृषि को प्रोत्साहित करती हैं, जिसके आधार पर गौण रूप से कृषि प्रदेशों का विभाजन किया जाता है, जिनमें से एक है निर्वाहक कृषि प्रदेश, यह कृषिप्रदेश उष्ण कटिबंधीय कृषि प्रदेश है, जिसे पुनः दो भागों में बाँटकर अध्ययन किया जाता है

1) आदिम कालीन ढंग से निर्वाहक कृषि
2) प्राच्य सघन निर्वाह कृषि प्रदेश,

1) आदिम कालीन कृषि २० उत्तरी तथा २० द० अक्षांशो के बीच उष्ण आद्र कटिबंध में भूमि के विस्तृत क्षेत्र में होता है जहाँ अधिक गर्मी और अधिक वर्षा के कारण फसल बड़ी तेजी से विकसित होता है, यहां के निवासी कृषक उतना ही भूमि पर खेती करते हैं जितने से परिवार का भरण पोषण हो जाता है, ऐसे प्रदेश मुख्यतः द० अमेरिका में आमेजन नदी का बेसिन, अफ्रीका में कांगो बेसिन तथा द० पू० एशिया के सुमात्रा, बोर्नियो, न्यूगिनि मलेशिया, थाईलैंड, कम्बोडिया आदि के आन्तरिक भाग हैं, ऐसे कृषि प्रदेशों में अलग जगह अलग फसलों की प्रधानता है, आदिमकालीन निर्वाहक कृषि भी दो प्रकार की होती है 1) स्थानान्तरित कृषि 2) स्थायी कृषि

2) प्राच्य सघन निर्वाह या गहन निर्वाहक कृषि, वह कृषि है जिसमें प्रधानतः खाद्य फसलों का उत्पादन स्थानीय उपभोग के लिए किया जाता है, इस पद्धति में विश्व की एक तिहाई जनसंख्या संलग्न है और जीवन निर्वाह करती है,

ऐसी गहन निर्वाह कृषि प्रायः समतल मैदानी तथा पहाड़ी भागों में पाए जाते हैं, यह कृषि मुख्यतः

मानसून एशिया के क्षेत्रों में केन्द्रित है, जिस जलवायु में वर्षा की अनिश्चितता भी होती है, इसलिए शुष्क खेत कृषि पद्धति द्वारा कई फसलों को एक साथ उगाया जाता है।

गहन निर्वाहन कृषि में मानवीय तत्वों का प्रभाव:→
इस कृषि में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानवीय तत्व है जनसंख्या का घनत्व है। जनसंख्या का घनत्व दिन, प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। अतः जनसंख्या घनत्व के अधिकता के कारण एक ओर कृषि अनिवार्य हो जाता है ताकि अधिकाधिक जनसंख्या का भरण पोषण हो सके। साथ ही अधिक श्रम की पूर्ति भी होती है।

अतः जनसंख्या के भरण पोषण के लिए गहन निर्वाहक कृषि आवश्यक बन जाता है। सघन घनत्व वाले क्षेत्रों में प्रति हैक्टेयर उत्पादन कम होता है अतः कृषि उत्पादन की सघनता को देखते हुए ऐसे फसलों का उत्पादन करना आवश्यक हो जाता है जो Per Capita अधिक भरण पोषण कर सके। ऐसा एक ही फसल है चावल। यही वजह है कि सघन निर्वाहक कृषि क्षेत्र में जनसंख्या अधिक होने के कारण उनके भरण पोषण के लिए चावल उत्पादन को ही महत्व दिया जाता है। इस फसल को उत्पादन के बाद स्थानीय खपत हो जाने से निर्यात नहीं हो पाता, लेकिन कुछ ऐसे देश भी हैं जो सघन निर्वाहक कृषि द्वारा उत्पादित फसल से स्थानीय माँग पूरा करने के बाद शेष फसल का निर्यात व्यापार भी करता है, जैसे वर्मा, द० पू० एशिया इत्यादि के देश।

गहन निर्वाहक कृषि के दो भागों में बाँटी जाती है,
a) चावल प्रधान गहन निर्वाहक कृषि → इस प्रदेश में कृषि की प्रमुख फसल है चावल, ऐसी खेती उन क्षेत्रों में होती है जहाँ पर्याप्त अनुकूल वातावरण एवं सघन जनसंख्या पाई जाती है।
b) चावल विहीन गहन निर्वाहक कृषि → ऐसे कृषि में चावल उत्पादन की मात्रा कम होती है, पर अन्य फसलों की प्रधानता

होती है। इस कृषि क्षेत्र को शुष्क कृषि क्षेत्र भी कहते हैं। इस कृषि प्रदेश में 100 cm से कम वर्षा होती है।

पूर्वी एशिया तथा द.पू. एशिया के मानसूनी प्रदेशों में ग्रीष्मऋतु मानसूनी वर्षा की होती है और शीत-ऋतु शुष्क होती है। अतः इन प्रदेशों में उन्नत प्रकार की सघन निर्वाहक कृषि होती है और चावल की मुख्य फसल है। इस कृषि में खाद और सिंचाई का उत्तम व्यवस्था करके कृषि दक्षता द्वारा अधिक उपजें प्राप्त की जाती है। इन देशों की बढ़ती हुई जनसंख्या की माँग को सघन कृषि द्वारा पूरा किया जाता है। ऐसे प्रदेशों में लगभग 85% लोग कृषिकार्य में लगे हुए हैं।

चावल प्रधान एवं चावल विहीन गहन कृषि की उत्पादन पद्धति में थोड़ी भिन्नता होती है। अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में खेतों में पानी भर कर धान रोपा जाता है। यहाँ वर्षा में चावल की दो तीन फसलें उगाली जाती है, जबकि वर्षा की भिन्नता के आधार पर शुष्क कृषि प्रदेशों में फसलों के उत्पादन में अन्तर आ जाता है।

शुष्क कृषि में नकदी फसलें जैसे गन्ना, कपास, तिलहन का महत्व है। कुछ क्षेत्रों में चावल की जगह गेंहू ज्वार, बाजरा भी प्रमुख ~~भी~~ होता है। यहाँ पशुओं का महत्व कम होता है।

वातावरण के साथ प्रकृति का सम्बन्ध :-

इस कृषि में मानसून का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसमें ऋतु के अनुरूप भिन्नता मिलती है। सामान्यतः फसल उगाने का औसत तापमान यहाँ मिलता है, पर चीन और जापान के उ. भाग में तापमान इतना कम हो जाता है कि फसलें उगाने में कठिनाई होती है यहाँ औसत वार्षिक वर्षा के वितरण में भी क्षेत्रीय भिन्नता मिलती है। इस प्रकार फसलें उगाने के लिए वर्षा और तापमान के आधार पर इसको चार प्रमुख प्रदेशों में विभाजित किया गया है।

1) वैसे प्रदेश जहाँ वर्ष भर उच्च तापमान तथा वर्षा 200 cm के आसपास होती है। ऐसे प्रदेश में सघन कृषि पाई जाती है जिसमें चावल की खेती हो

महत्वपूर्ण है। साल भर में दो-तीन फसलें उगा ली जाती हैं। ऐसे प्रदेश मुख्यतः समुद्र तटीय प्रदेश होते हैं।

2) वैसे प्रदेश जहाँ वर्षा 100-200 cm तक होती है, गर्मी में यहाँ चावल उपजाया जाता है, क्योंकि उपयुक्त तापमान उपलब्ध रहता है, शीत ऋतु में यहाँ तापमान घट जाने से ऋतु शुष्क और ठंडा होता है और उस समय उपयुक्त तापमान से रबी की फसल ही उगाई जाती है।

3) वैसे प्रदेश जो बहुत ही कम तापमान वाला प्रदेश है, जहाँ गर्मी में चावल उपजाना संभव नहीं, जैसे जापान का होकैडो या उ० चीन, 60 cm - 100 cm वर्षा होने लेकिन तापमान कम होने के कारण चावल की फसल उगाना संभव नहीं होता। अतः इन प्रदेशों में शुष्क कृषि की ही प्रधानता है।

4) ऐसे प्रदेश जहाँ 50 cm से कम वर्षा होती है, ऐसे प्रदेशों में केवल ज्वार बाजरा जैसी मोटे अनाज ही उगाए जाते हैं, कहीं कहीं सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होने से गेंहू तथा कपास भी उगा लिया जाता है, भारत, चीन के आन्तरिक भागों तथा पाकिस्तान के कई क्षेत्रों में ऐसी ही कृषि की जाती है।

चावल की खेती के लिए समतल मैदान उपयुक्त होते हैं, अतः गहन कृषि प्रदेश प्रायः समतल मैदानी तथा कुछ पहाड़ी भागों में की जाती है, पहाड़ी भागों पर मुख्यतः ज्वार, बाजरा, रागी और अन्य गौण फसलें उगा ली जाती है। मानसूनी प्रदेशों में गंगा-ब्रह्मपुत्र, इरावदी, मिनाम मीकांग, सिक्यांग, ह्वांगहो इत्यादि नदियों के मैदान हैं जहाँ उत्पादन के लिए उपयुक्त उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी मिलती है, जापान तथा द० पू० एशिया के देशों में जहाँ मैदान सीमित है तथा ढालू जमीन की अधिकता है वहाँ सीढ़ीनुमा खेत बनाए जाते हैं और वेदिका पद्धति से खेती की जाती है। इस प्रकार यह कृषि प्राकृतिक वातावरण के साथ सामंजस्य रखते हुए विकसित है।

Continue...